

पशुओं में हीट स्ट्रोक - कारण, लक्षण, उपचार एवं बचाव के प्रभावी उपाय

अंकिता यादव¹, कविशा गंगवार¹, बृजेश कुमार यादव², नीरज कुमार गंगवार¹

पशु विकृति विज्ञान विभाग¹, पशु चिकित्सा नैदानिक विभाग²,
पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो-अनुसंधान संस्थान,
मथुरा, उत्तर प्रदेश , 281001

ग्रीष्म ऋतु में बढ़ते तापमान और लू के कारण जानवरों में हीट स्ट्रोक की समस्या तेजी से बढ़ जाती है। यह हीट स्ट्रेस का ही गंभीर रूप है, जिसमें पशु का शरीर तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है और समय पर उपचार न मिलने पर जानलेवा स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

हीट स्ट्रोक क्या है?

ग्रीष्म ऋतु में तापमान के अत्यधिक बढ़ने से जानवरों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। जब जानवर के शरीर का तापमान 40°C या उससे अधिक हो जाता है और शरीर की ठंडा करने की प्राकृतिक क्षमता विफल हो जाती है, तो उसे हीट स्ट्रोक कहा जाता है। यह समस्या पालतू पशुओं (गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता आदि) के साथ-साथ पोल्ट्री और वन्य जीवों में भी देखी जाती है। यदि समय रहते उचित उपाय न किए जाएँ, तो यह पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन (दूध, अंडे) और प्रजनन क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। यह एक आपातकालीन स्थिति है।

हीट स्ट्रोक के मुख्य कारण -

- अत्यधिक गर्मी और धूप
- पानी की कमी
- बंद या गर्म जगह में रहना
- अधिक शारीरिक गतिविधि
- शरीर पर घना फर (बाल)

हीट स्ट्रोक के प्रमुख लक्षण -

- तेज सांस लेना या हांफना
- अत्यधिक लार गिरना
- सुस्ती या कमजोरी रहना
- शरीर का बहुत गर्म महसूस होना

- उल्टी या दस्त का लगातार आना
- लड़खड़ाना या बेहोशी की अवस्था आना

शरीर पर हीट स्ट्रोक का प्रभाव -

- उच्च तापमान से तांत्रिका तंत्र का क्षय होना
- दिल की धड़कन तेज होना
- ब्लड प्रेशर का गिरना
- शॉक की स्थिति उत्पन्न होना
- ऑक्सीजन की कमी होना व सांस फूलना
- प्रोटीन क्षय , एंजाइम फेलियर तथा मल्टी-ऑर्गन फेलियर
- उन्नत बचाव रणनीतियाँ -
- पर्यावरण प्रबंधन - शेड की छत पर सफेद पेंट करना या घास बिछाना (थैचिंग), पानी का छिड़काव करना तथा उचित वेंटिलेशन रखना।
- पोषण प्रबंधन - उचित मात्रा में पानी में इलेक्ट्रोलाइट और मिनरल मिक्स मिलाना, हरा चारा अधिक देना तथा सूखा चारा कम करना।
- प्रबंधन तकनीक - सुबह और शाम को ही पशुओं को बाहर निकालना, दोपहर की तेज धूप में पशुओं को आराम देना, पशुओं को भीड़ में न रखना तथा लंबे बालों वाले पशुओं की समय-समय पर ग्रूमिंग करना।

हीट स्ट्रोक के कारण पशुपालक पर आर्थिक प्रभाव -

- पशु के दूध उत्पादन में भारी गिरावट
- प्रजनन विफलता
- पशुओं की मृत्यु से सीधा आर्थिक नुकसान
- दवाइयों और उपचार का खर्च

प्राथमिक उपचार -

- पशु को छाया या ठंडे स्थान पर रखें तथा साफ और ठंडा पानी पिलाएं
- गीले कपड़े से पशु का शरीर पोंछें या हल्का पानी डालें
- पशु को पंखे की या प्राकृतिक हवा लगने दें

- स्थिति गंभीर होने पर पशु चिकित्सक की सलाह लें तथा समय पर इलाज कराएं

निष्कर्ष

हीट स्ट्रोक एक जटिल और खतरनाक स्थिति है, लेकिन सही जानकारी, समय पर पहचान और वैज्ञानिक प्रबंधन से इसे पूरी तरह नियंत्रित किया जा सकता है। पशुपालकों के लिए यह जरूरी है कि वे पारंपरिक तरीकों के साथ आधुनिक तकनीकों को अपनाएं ताकि पशुओं को सुरक्षित और स्वस्थ रखा जा सके। सही देखभाल, समय पर पहचान और तुरंत उपचार से पशुओं की जान बचाई जा सकती है। गर्मी के मौसम में पशुओं के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना हर पशुपालक की जिम्मेदारी है।